दूसरी बार
सवत् २०१२
मूल्य २)

मुद्रक सोहनलाल जैन
जयपुर प्रिंटर्स
जयपुर

प्रकाशकीय

कवि श्री चन्द्रसिंह द्वारा लिखित राजस्थानी भाषा का यह दूसरा ऋतुकाव्य 'लू' बादळ री प्रकाशन की दूसरी भेंट के रूप में आप के सम्मुख है। हमारी पहली भेंट 'बादळी' को हिंदी जगत ने जिस सहृदयता के साथ अपनाया उससे हम बहुत प्रोत्साहित हुए हैं। इसी कारण थोडी ही अवधि में इस काव्य के तीन संस्करण प्रकाशित हो गये। हमें विश्वास है 'लू' को भी साहित्यप्रेमियों द्वारा वैसा ही सम्मान प्राप्त होगा।

सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्री श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, अध्यक्ष, बंगाल राज्य परिषद् ने पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की है। विश्वभारती शांतिनिकेतन के अध्यक्ष आचार्य नंदलाल बसु ने काव्य के भावों को स्वयं कवि के मुख से सुनकर 'लू' से सताये हुए मृगयूथ का चित्र बडी रुचि के साथ बनाकर दिया है।' इस आभार के लिये हम दोनों महानुभावों के अत्यंत उपकृत हैं। बीकानेर के तरुण कलाकार श्री द्वारकाप्रसाद ने मुख पृष्ठ का चित्र बडी लगन से तैयार किया है जिसके लिये उन्हें धन्यवाद।

द्वितीय संस्करण का प्रकाशकीय वक्तव्य

'लू' के प्रथम सस्करण को जिस सहृदयता से राजस्थानी प्रेमियो ने अपनाया उससे हमारा उत्साह अधिक वढा है, इसमें कोई सन्देह नही। प्रथम वर्ष में ही सारी प्रतियाँ हाथोहाथ विक गई और अब दूसरा सस्करण आपके सामने है। यदि इसी प्रकार राजस्थानी प्रेमी हमारे प्रकाशनो को अपनाते रहे तो हम योजनानुसार अनेक उत्तम प्रकाशन साहित्य समाज को भेंट कर सकेंगे।

भूमिका

कवि श्री चन्द्रसिंहजी-री मारवाडी भाषा-में लिखी नई कविता-पुस्तिका-री भूमिका रै रूप-में दोय शब्द लिखण-नैं जिको अनुरोध म्हं-नैं करियो है, इण-सूं हूं आप-नैं विशेष सम्मानित समझूं हूं ।

मारवाड़ी-भाषा-रै ग्रंथ-री भूमिका मारवाड़ी-में-ईज होवणी चाहिजै । पिण म्हं-नैं मारवाड़ी-में कांई लिखण-री शक्ति कठा सूं व्हे ही ? म्हारी मा बंगभाषा-री वैण मरुभाषा-रो आश्रय लेवण-री योग्यता-नैं म्हैं कदीज प्राप्त करियो नहीं । तथापि अैं प्रारंभिक दोय वाक्य मरुभाषा-में लिखण-रो जिको अक्षम प्रयास अठै म्हैं करियो है, तिको केवल म्हारी मातृष्वसा मरुवाणी-रै चरण-कमलां-नें म्हारी श्रद्धांजळि है । मरुदेश-री संतान म्हारी धृष्टता-रै कारण म्हं-नैं क्षमा करै । अब म्हारो स्वल्प नै विनीत वक्तव्य हूं राष्ट्रभाषा हिन्दीज-में कहूं-हूं ।

जिस देश-में महाकवि कालिदास-ने 'मेघदूत' काव्य लिखा था उसी-के पडोस-के मरुदेश-के एक कवि-ने हमें बादलों-के गाने सुनाये है । इनकी 'बादळी'-में मरुदेश-की अपनी बोली-ने फिर अपनी स्निग्ध छाया-से मरुवासिओं-के चित्त-गगन-को छा लिया है । मारवाड और पश्चिम

राजस्थान-के आकाश और धरती-पर मेघ और वरसात-का जो खेल देख पडता है, इन्होने सच्ची काव्य-दृष्टि-के साथ उस-पर प्रकाश डाला है, जो कि काव्य-रसिको-के लिए निहायत रोचक होगा। अब मरुवेश-की खास चीज ग्रीष्म-वायु-लू का भैरव और प्रचड सदेश लेकर कवि-की दूसरी काव्य-सृष्टि आई है। लू और बादल, इन-में एक दूसरे-का पूरक है, इन दोनो-से जीवन-की रिक्तता और पूर्णता आती है, मानो ये मृत्यु-रूपी शिव और जीवन रूपिणी शक्ति-के ही प्रतीक है। श्री रवीन्द्रनाथजी-ने लू-के वाहन वैशाख महीने-को गेरू रग-के रूक्ष वस्त्र पहिने हुए 'भैरव, रुद्र वैशाख' और वैरागी कह कर अपनी कविता-में इसका स्वागत किया है। इस द्वितीय श्लोक-सग्रह ग्रथ-में भी कवि-ने अपने अनुभव और सत्य दर्शन-को ग्रीष्म-कालीन प्रकृति-के चित्रण-में सार्थक रूप-से दिखाया है।

कवि श्री चन्द्रसिहजी-ने इन कविताओ-में एक नई सृष्टि की है, जिसमें भाव के साथ ही साथ भाषा का वैशिष्ट्य भी लक्षणीय है। करीब डेढ करोड राजस्थानियो-की साहित्यिक भाषा 'डिंगल'-ने इन-की कविता-में नवीन रूप से आत्म-प्रकाश पाया है। विगत कई शताब्दी तक मरुभाषा मारवाडी-के आधार-पर बनी डिंगल-में राजपूताने-की अन्तर्वाणी प्रकट होती रही थी। देश-की बोली अब केवल घर-की बोली हो गई है, सौतेली मा 'पिंगल' याने प्राचीन ब्रजभाषा-की छोटी बहन हिन्दी अब नई मा बनी है, उसी-का जगजयकार सर्वत्र हो रहा है। और ऐसा होने-के कारण भी है। तो भी, 'भाषा-सतान'-के हृदय-में अपनी मा के लिए

प्रेम और गौरव होना स्वभाविक है। राजस्थानी मारवाडी-भापा-के प्राचीन साहित्य-के लिए गौरव अनुभव करना, न केवल राजस्थानियो-के लिए, पर समूचे भारतीयो-के लिये उचित होगा, मध्य-कालीन भारत-की सस्कृति तथा साहित्य-के उद्यान-में डिंगल साहित्य एक अनोखा पुष्प-तरु है, एक समय जिस-के रगीन और सौरभमय काव्य-पुष्पो-से भारत-साहित्य-की फुलवाडी सुरभित और सुशोभित हुई थी। अब वह मृतप्राय तरु जिलाया जा रहा है। अपनी मातृभाषा की मनोहारिता-को मरुदेश-के लोग कभी भूल न सके। कही मै-ने इस विपय-का एक पद पढा था, जो ऐसा है।

सोरठियो दूहो भलो, भल मरवण री वात।
जोवन छाई धण भली, तारां छाई रात॥

इस चिर-युवती या चिर-नवीना नक्षत्र-खचित रात्रि-सी सुन्दरी और गभीरा भाषा-को फिर अपने घर-की रानी वनाने की चेप्टा, हर मरुदेश-वासी का फरज है। भारत-भापा-धुरधर परलोक-गत सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन-ने अपने मारवाडी व्याकरण-में भापा की वाक्य रीति के उदाहरण-के रूप-में सच-मुच लिखा है कि, "मारवाड़ी भापा-री उन्नति होवणा-सूं मारवाड़-रो तो फायदो हुवं-ईज।"

पर साथ-ही-साथ यह न भूलना कि राप्ट्रभापा हिन्दी-को न छोडना। मारवाडी फिर साहित्य और शिक्षा-की भापा वने, परन्तु आन्त प्रादेशिक भापा हिन्दी-का पठन-पाठन घटाया न जाय। सुदूर पूरव-से वङ्ग भापी मै पश्चिम-प्रात-के मरुदेशवासी भाइयो-को राप्ट्रभापा हिन्दी-ही-के सहारे वधाई दे रहा हू कि "भाइयो अपनी मातृभापा-का स्थान फिर ऊँचा

करो, उस-से अपनी मानसिक उन्नति करो और हृदय-का प्रकाश करो, भारत सस्कृति-में मरुदेश-की खास साहित्य-सामग्री लाकर उसकी परिपुष्टि और भी करो, पर इस-के साथ हिन्दी-की चर्चा-को मत छोडो, भारतीय आधुनिक भाषाओ-के मोती-हार-की मध्य-मणि बन-कर हिन्दी विराजती रहे, पर एक-एक प्रान्तिक-भाषा-रूपी मोती-की आव-ओ-ताव-से इस हार-की चमक दमक भारत माता-के कठ-की शोभा-को सदा-के लिए बढाती रहे ॥"

इति शम्

'सुधर्मा'
कलकत्ता

सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

अपणै मन री

प्रकृति अपणा अनेक रूपा में ही पूर्ण हुवै। पहाड़ जठै सुहावणा दीसै वठै डरावणा भी। सूरज, चाद अर तारामडळ अपणी जगमगाट रै आवरण में अपणी कठोरता अर भयकरता छिपाओ रावै। समदर ऊपर सू शात पण माय उथळ पुथळ घणी। अिण ही भात अूपर सू विकराळ दीखण वाळी वस्तु में भी कोमळ मू कोमळ चीज छिपी मिळै।

वसत अर वरसाळै रै बीच में लूआ रो राज भी अिण ही प्रकृति री अनेकता रो अेक रूप—अर स्वाभाविक रूप समझणो चाहीजै। वसत रो दिखण पवन अर वरसाळै री परवा अर सूरयो दूणा रै बीच री लू कितरी ही कठण सुभाववाळी होता थका भी पहली रो विणास तो दूसरी रो सिरजण करणवाळी हुवै।

इण ही भाव नै ले कोअी सहृदय लू रै प्रति अन्याय किया कर सकै—खास कर मुरधर रो वासी तो लू रै पहलै लपकै नै ही वसत ही सारी सोभा भेट चढा दे तो कुणसी

अचरज री वात—क्यू के वादळी नै जनम देणवाळी आ ही 'लू' है। इणी भाव नै ले कही—

जीवण दाता वादळया थासू जीवण पाय
भल लूआ बाजो किती मुरधर सहसी लाय

आखातीज २०१०
चांद जळेरी, बिरकाळी
(बीकानेर)

चन्द्रसिंह

समर्पण

तपियो लूआ ताव ज्यूं
वरस्यो वादळियां
निृप गग थारी याद 'लू'
रहसी रळमिळिया

वसिया सुरगा वास
मती विसार्‌या वीकपुर
आ 'लू' इण ही आस
समपू निृप गंग याद में

—चन्द्रसिंह

ऌ

लू

सोभा सकल वसत री
सोपै मुरधर आप
लूआ थे फूलो फळो
पावो सुख अणमाप

हे लूओ ! यदि तुम इसी में अपार आनन्द अनुभव करती हो तो लो, आनन्द से वृद्धि को प्राप्त करो, मरुधरा स्वय अपने प्रिय वसत की सारी श्री तुम्हे समर्पण करने के लिये प्रस्तुत है।

लू

१

फूलो की नरम नरम पखुडिया, नवाङ्कुरित नरम नरम पत्ते और नन्ही नन्ही मदुलताओ को बचाने का प्रयत्न तो करना, लूओ !

२

सूर्य-किरणो से गले मिलने की उत्कठा में कलिया कभी से मुकुलित हो उठी थी पर साथ ही लूओ का आगमन अनुभव कर उनके हृदय में तीव्र वेदना होने लगी ।

लू

१

कोमळ कोमळ पाखड्या
कोमळ कोमळ पान
कोमळ कोमळ वेलड्या
राख्या लूआ ध्यान

२

सूरज किरणा चाव मे
फूटी कळी समूळ
लूआ दीसी सामनै
लागी हिवडे सूळ

लू

३

होड वद वद कर मलयानिल को सौरभ लुटाने वाले वे ही कुसुम, जिस दिन से उनका लूओ से साक्षात्कार हुआ है, अपने जीवन की आशा तक छोड चुके हैं।

४

फूलो की प्यालियो में परोसे हुए मकरन्द को पान कर तो, लूओं तुम्हे गुलाबी नशे में झूमना चाहिए था पर न जाने किस कारण तुम पागल की तरह प्रलाप करने लगी हो।

५

लूओ ने आते ही वासती सौरभ को चूस लिया, कलिया कुम्हला गई, और फूलो से पखुडिया विलख विलख कर विछडने लगी।

३

आगै वध वध वाटता
दिखण पवन नै वास
जिण दिन लूआं भेटिया
फूला छूटी आस

४

कर ठाली प्याल्या सवै
फूला पुरसी जेम
झीणी मसती झूमती
वहकी लूआ केम

५

चैती सौरभ चूम ली
कळ्या गई कमळाय
फूला विछडी पाखड्या
लूआ वाजी आय

६

कच्ची कच्ची कोपलें, फूल, फल और सारी वनस्पति, जो हाल ही
ों मुकुलित हुई थी, वसत की उस हरी भरी वाटिका को लूओ ने
गते ही लूट लिया।

७

अनेक प्रकार की आशाए लेकर वल्लरियो ने कलियो का बडे प्यार
। पोषण किया था। अब वे विलख विलख कर रो रही है। लूओ ने
कलियो को जलाकर उनका सर्वस्व लूट लिया है।

८

मलयानिल की गोद में जो प्रसून कल आनन्दातिरेक में झूल रह
ो, लताओ के उन प्यारे प्रसूनो को शत्रुस्वरूपा लूओ ने जला डाला।

लू

६

काची कूपळ फूल फळ
फूटी सा वणराय
बाडी भरी वसत री
लूटी लूआ आय

७

पोखी कळिया प्यार सू
भर भर आस अटूट
विलखै सारी वेलड्या
लूआ लीघी लूट

८

दिखण पवन री गोद में
हीड्या हस हस काल
बैरण लूआ वाळिया
बेला रा वै लाल

लू

९

नन्हें नन्हें कुसुम, पूर्ण विकसित फूल और कच्ची कच्ची कलियो को झुलसा कर लूओ ! तुमने यह क्या भूल की !

१०

आखो के सामने प्रतिक्षण झडते हुए प्यारे प्रसूनो को देखकर असह्य वेदना से वल्लरियां सूखने लगी और धीरे धीरे जड सहित अपने को नष्ट कर डाला ।

११

बागो में खिलने वाले पुष्पो को तो प्रतिदिन मालियो का डर लगा रहता है पर यदि तुम वन में खिलने वाले पुष्पो के प्रति सहृदयता रख सको तो उनके जीवन में अन्य कोई बाधक नही ।

लू

९

नान्हा नान्हा फूलडा
मोटा मोटा फूल
काची कळिया रोसिया
कीधी आ के भूल

१०

झट झट आव्या देखता
झड झड पडिया फूल
भुर भुर वेला सूकिया
भुर भुर गई समूळ

११

मन में डर नित माळिया
वागा फूल्या जेम
थासू होय निभाव जे
जगळ फूला खेम

लू

१२

जिस दिन से वेलो ने अपने सामने फूलो को झडते देखा है, उन्हें अपार दु ख हो रहा है। उस असह्य वेदना से वे स्वय जलती जा रही है। अत लूओ ! तुम वृथा क्यो उन्हें अपने प्रचड ताप से जला रही हो?

१३

लूओ के उग्र ताप को आम न सह सके, वे पीले पड गये और उनका वुरा हाल हो गया। परन्तु करील फलो का लू कुछ न विगाड सकी अपितु वे पक कर लालो की तरह लाल हो गये।

१४

लूओ ने क्रोध में आकर जव समस्त वनस्पति को जला डाला तव पृथ्वी ने वीजो को यत्नपूर्वक छिपा कर वचा लिया अन्यथा वीजो के जल जाने पर पुन वनस्पति कैसे प्रस्फुटित होती !

लू

१२

जिण दिन झडता देखिया
पायो दुख अणमाप
वळसी आपे वेलड्या
मतना सेको ताप

१३

लूआ लाग पिळीजिया
आमा हाल वेहाल
पीजू मुरघर पाकिया
ले लाली, ज्यू लाल

१४

लूआ आय'र रोस में
वाळी जद वणराय
वड़ै जतन सू वीज सै
राख्या धरा लुकाय

लू

१८

मरुधरा अग्नि की लपटें उगल रही है। वेही लपटें लूओ पर सवार होकर आ रही है और उनका स्पर्श अगो को जला रहा है। उनके डर के मारे जीव सिमट कर छिपे रहते है।

१६

पृथ्वी तवे के समान तप रही है, ऊपर आकाश तप रहा है और लूओ की लपटो से सारी दिशाए तप रही है। इन्ही सब कारणो मे जीव जला जा रहा है।

२०

जैसे जैसे ससार के प्राणी सूखते जा रहे है उसी मात्रा में लूए तेज होती जा रही है। वे सबको जला रही है, भस्म कर रही है और सुखा रही है। सबको भस्मसात् देखकर उनका घमड और भी बढता जा रहा है।

लू

१८

धरा गगन झळ ऊगळै
लद लद लूआ आय
चप चप लागै चरड़का
जीव छिपाळी खाय

१९

तोवै ज्यू धरती तपै
ऊपर तपै अकास
लू लपटा सै दिस तपै
जीव तपै इण तास

२०

ज्यू ज्यू सूकै जीव जग
त्यू त्यू लूआ तेज
बाळै जाळै सोसवै
दूणो चढै मगेज

लू

२१

चुग्गे के चाव में चिडियो के नन्हें नन्हे बच्चे चोचे खोलते है पर इतने ही में लू की तेज लपट आकर उनके कलेजे तक को जला डालती है और उनकी चोचें खुली ही रह जाती है ।

२२

शमी वृक्षो की कच्ची कच्ची फलिया (सागरी) लूओ की लपटो से पक चुकी है । वे पकी हुई फलिया (खोखा) हरिणों को सकेतो द्वारा आमन्त्रित कर झडने लगी है ।

२३

पत्रविहीन करील (कैर) लूओ के क्रोध को कम करने में डटो हुवे है । पर लूओ की 'सें सें' आवाज सुनकर उनमें बैठी हुई हरिणिय के होश भूल रहे है ।

लू

२१

चूण लेण रै चाव में
चिड़िया खोलै चाच
भीतर सारो भूजवै
लूआ अकरी आच

२२

सागरिया सह पाकिया
लूआ री लपटाह
खोखा लाग्या खिरणनै
दे झाला हिरणाह

२३

कैर लडै बिन पानडा
रोकै लूआ रोस
सुण सू साता जोर सू
भूलै हिरणा होस

लू

२४

छोटे बडे सभी वृक्ष सुखा दिये गये है, केवल बडे बडे करील ही डटे हुए हैं। उन करीलो की ओट में छिपी हुई हरिणियो को 'लू' न जाने किस पुराने वैर के कारण जला रही है ?

२५

गर्भवती हरिणियो के छिपने का कोई ठिकाना नही रहा है। उनके रोम रोम से लूओ की लपटें निकल रही है।

२६

शरीर पर अग्नि-ज्वाला, प्यास के मारे अन्तर्दाह, इन दोनो अग्नियो के बीच में बेचारी हरिणियो के अभागे प्राण सूखे जा रहे हैं।

लू

२४

बोझा वाठ सुकाविया
अड्या दडाळा कैर
दडी पड़ी हिरण्या जठै
लू वाळै किण वैर

२५

पेट भार हिरण्या वहै
रह्यो न ओटो कोय
रूआ रूआ नीसरै
लूआ धूआ लोय

२६

तन पर लूआ आग सी
अन्तर तिलकी आग
दो आगा री आच में
पडिया प्राण अभाग

लू

२७

सूखे तालो और तलाइयो में हरिण भटकते फिर रहे है, पानी की बूंद तक नहीं मिलती। वे प्यास से व्याकुल होकर गिर पडते है, फिर उठ खडे होते है, खडे होते ही फिर गिर पडते है। ऐसी स्थिति में निश्चित स्थान तक कैसे पहुचा जाय, यह एक बडी समस्या है।

२८

जिन हरिणो की पीठो की चमक के सामने सोने का रग भी लज्जित होता था वे ही आज लूओ के ताप से तप कर तावे के सदृश हो गई है।

२९

लूओ की लाय में उनके भूरे भूरे रोम झुलस गये है, उनके शरीर के चारो तरफ लू के 'डाम' से लगते है और वे 'डिडाय डिडाय' कर गिर पडते है।

लू

२७

सूका ताल तळाइया
फिर फिर भटका खाय
पड़ै उठै उठ उठ पड़ै
अेढो किण विध आय

२८

सुवरण वरण लजावती
हिरणा पीठा जेह
तप लूआ रै ताव में
तावावरणी तेह

२९

भूरा रू भुरडीजिया
लूआ वैरण लाय
चटका लागै चोगिरद
पड़ै डिडाय डिडाय

लू

३०

पत्तो की मरमर से चमक कर कोसो तक चौकडी भरने वाले हरिण प्यास के मारे सुध बुध खोकर तालावो के तटो पर आये खडे है।

३१

लूओ की ललकारो से हरिण जगल से गाव की ओर दोपहर से कितने ही पहिले भगा दिये गये। मध्याह्न ही में वे कूओ और तालावो के पास आ पहुचे।

३२

कूओ के पास आते ही अब काले हरिण लोगो के शोर से भयभीत नही होते। वे प्यास के मारे मध्याह्न ही में पानी के लिए 'खेलो' में टूट पडते है।

लू

३०

पान खडक्क्या जावता
कोसा छाळोछाळ
वै सागी सुध वायरा
आया जोडा पाळ

३१

भातै पहल भगाविया
लूआ ललकारा
जोडा कूआ आविया
घोळा दोपारा

३२

कूआ सामा आवता
डरै न अब रोळा
✓ खेळ्या में टूट्या पडै
काळा दिन घोळा

लू

३३

तालावो के किनारे हरिणो के पीने के लिए घट-कपालो में रक्खे हुए पानी को लूओ की लपटें सुखा डालती है। उनमें केवल भीगी हुई मिट्टी ही बच रहती है।

३४

ऐसी गीली मिट्टी में प्यास से व्याकुल हरिणो की ठोडिया वरवश टिक गई है और पाल पर घुटने टिक गये है। अब वह किस प्रकार वापिस मुडे और किस प्रकार छलागें भरे!

३५

जल-शून्य घट-कपालो में उनके सीग लगे हुवे है, ऊपर की तरफ पैर हो चुके है और उलटे पडे हुवे है। उनके प्राण लूओ द्वारा निकाल लिये गये है। हरिणो का सर्वनाश प्रस्तुत हो गया है।

लू

३३

पाळा पर रोप्या पड्या
तगरा हिरणा हेत
पाणी लूआ चोसियो
ठाली आली रेत

३४

ठोडी आली ठोड में
गोडी सामी पाळ
अव किण विध पाछो फिरै
किण विध साधै छाळ

३५

सूका तगरा सीगटी
लपट पड्या ओटाळ
जी लूआ ले नीसरी
आयो हिरणा काळ

लू

३६

आखें पानी से भरी है, गरदन नीचे की ओर झुकी है, सिसकती हुई उनको कठिनता से श्वास आ रही है, ऐसी स्थिति में हरिणिया लूओ से पुकार कर रही है।

३७

हे लूओ ! यदि तुम्हे हमारी वेदना का थोडा सा भी ज्ञान होता तो तुम अवश्य ही वादलियो द्वारा जल वरसा कर हमारे इस कठिन समय में सहायक होती।

३८

स्त्री-स्वभाव के कारण तुम ईर्ष्यावश हमारे शरीर को चाहे भून डालो परन्तु मातृत्व की भावना को कभी कलकित मत करना और हमारे जो मृगशावक है उनको अवश्य वचा लेना।

लू

३६

आखडिया पाणी भर्‌या
नीची नाड पसार
सिसक सिसक सासा भरै
हिरण्या करै पुकार

३७

जे लूआ थे जाणती
म्हारै तन री पीड
वादळिया नै जनम दे
भली वटाती भीड

३८

नारपणै रै ओसकै
भल अग भूजो आय
मती लजाया मापणो
लेया लाल वचाय

३९

जिस दिशा में प्रथम प्रसव-वेदना से पीडित हरिणिया मिलें उनकी ओर अपनी शीतल दृष्टि रखना और उनके पास से जाते हुए अपनी प्रचड किरणों को तनिक ऊचा उठा लेना ।

४०

प्यास के मारे जिनकी जिव्हाए सूखने लगी हो, आखो के सामने जिनके अधेरा फिर रहा हो, ऐसी स्थिति में जव मृगशावक अपनी माताओ से अलग होने लगें, तुम अवश्य उनकी सहायता करना ।

४१

मृतावस्था में पडी हुई मृगियो (हरिणियो) के स्तनो से लगे हुए मृगशावको की आड को तो तुम आते जाते मत हटाना ।

३९

जिण दिस देखो सूवती
पैल वेम हिरण्याह
ठडी निजरा जोयज्यो
कर अूचो किरण्याह

४०

जीभडल्या सूकै अिमी
आस्या जाळो आय
विछड़ै जद वाखोटिया
करज्यो जाय सहाय

४१

मा मरती रै हाचळा
लाग रह्या वाखोट
लूआ मती उघाडज्यो
आता जाता ओट

लू

४२

मातृहीन मृगशावक लडखडाते हुए जब चलना सीख रहे हो उस समय उनके समीप जाते हुए थोडा ध्यान अवश्य रखना।

४३

पानी की खोज में बेहाल, लडखडाते हुए उन्हें मातृविहीन समझ, लाड प्यार करने मत लग जाना। कही तुम्हारे लाड प्यार से उनका प्राणान्त न हो जाय।

४४

ग्रीष्म ऋतु में शिकारियो ने शिकार की सौगन्ध ले ली है। गर्मी के कारण शिकारी कुत्तो का भी डर न रहा। अब तो केवल तुम्हारे ताप ही के कारण प्राण सूखे जा रहे है।

लू

४२

मा वारा वाखोटिया
थिग थिग पकडै चाल
लूआ नेडी आवता
खिणेक राख्या ख्याल

४३

पाणी री पडताल में
लडथडता वेहाल
लूआ मती लडायज्यो
मा वारा वै लाल

४४

सोगध लीध सिकारिया
नह लाहोरी आय
थारो सेको एक वस
लूआ प्राण सुकाय

लू

४८

चार चार दिन तक जो ऊट पानी नही पीते थे वे ही लूओ के राज्य में दिन मे तीनो समय पानी पीने को तैयार रहते है।

४९

गायें, भैसें और ऊट सब अधमरे से पडे है, कानो पर लूओ की चपटें लग रही है जिनके मारे उनकी गरदनें हिलती है, ऐसा लगता है मानो वे सब प्राणो की याचना कर रहे है।

५०

भैसो की काली चिकनी पीठो पर आग सी बरसाती हुई लूओ से होम की वेदी का सा दृश्य दिखाई पडता है और उनका रग होम धूम-धूसरित सा जान पडता है।

४८

अूट जिका नह ढूकता
पाणी पर दिन च्यार
सागी लूआ राज में
तीना वखता त्यार

४९

गाया भैंसा अूट सह
पडिया आधै प्राण
लूआ सेकै कानडा
नाड हिलै कर त्राण

५०

भैंसा पीठा चीकणी
अूपर लूआ आग
वेदी सी दीसै वणी
होम धुवासो लाग

लू

५१

मालिको के देखते देखते लूएँ भैसो का दूध पी जाती है। भैस की तरफ उसकी बच्ची (पाडी) और बच्चो की तरफ उसकी मा (भैस) देखती रह जाती है।

५२

भैसो के स्तनो में अब दूध नही आता है इसी कारण उनकी बच्चिया भी सूखी जा रही है। दूध दुहने वाले हार कर खाली बर्तन लेकर ही उठ खडे होते है।

५३

छप्पर और मकानो के अन्दर, बाहर पूलो की ओट कर बडी युक्ति से मालिक उनकी रक्षा करते है, फिर भी लूएँ अपना वार किये बिना नही रहती।

लू

५१

घणिया आख्या देखता
लूआ चूगै आय
मा सामी पाडी तणै
पाडी सामी माय

५२

भैंसा मूळ न पावसै
सूकै पाडी साथ
हार दुहारा उट्ठिया
ठाली वरतण हाथ

५३

छप्पर ओरा छांह में
कर कर पूळा ओट
घणी जुगत राखै घणी
लुआ न चूकै चोट

लू

५४

एक समय था जब भैसो की पीठ इतनी चिकनी थी कि उन पर मक्खिया भी फिसलती थी, पर अब जिस दिन से 'लू' चलने लगी है उनकी पीठो पर से पानी भी नही फिसलता।

५५

प्रत्यक्ष मे भैसो का दुग्ध पान कर लूओ ने अपरिमित बल का सचय कर लिया है, अब आगे आको का दूध पीकर तो ये मालूम पडता है प्राण लेने लगेंगी।

५६

लूओ ने सारी पृथ्वी को छान डाला और इतना पीछा किया कि शीतलता को कही पृथ्वी के नीचे जाकर साठीके (साठ पुरुप गहरे) कुओ में शरण लेनी पडी।

लू

५४

कदेक माख्या तिसळती
भैंसा री पीठाह
अब पाणी नह तीसळै
जिण दिन लू दीठाह

५५

चोडै भैंसा चूगता
पायो बळ अप्रमाण
आका वारी आवता
लूआ लेस्यो प्राण

५६

लूआ था लारो लियो
छाणी सा घर आय
सीतळता लीधी सरण
साठीका में जाय

५७

इन गहरे कूओ पर लूओ का वश न चला तब क्रोध में आकर छोटी कुइयो, कु डो और तालावो को सुखा डाला ।

५८

लू इतने तीव्र वेग से चलती है कि पृथ्वी के नीचे तल के पानी तक को चूस लेली है । इसी कारण छोटी टोटी कुइयो का जल सूख जाने पर प्राणी अधीर हो उठते है ।

५६

जहा कूओ का पानी खारा है, प्रत्येक दिशा में जहा की भूमि ऊसर है, जहा की वस्तिया भी उजडी मी मालूम पडती है, ऐसे लोगो को लूओ ! अपने प्रखर प्रताप से मत जलाओ ।

लू

५७

साठीका पर नह चल्यो
लूआ रो जद दाव
झूझळ में सह सोसिया
वेर्‌यां कुड तळाव

५८

वाजै लू इण वेग सू
चोसै जळ तळ सीर
वेर्‌या ठम ठम वाजता
हालै जीव अधीर

५९

खारो पाणी कवटा
दिस दिस वजड़ भोम
उजड्‌या सा वसिया जठै
मिनखा नै मत होम

लू

६०

प्यास वुझाने की आशा से आये हुए प्राणियो को निराश लौटते देखकर सूखे तालाव अधीर हो उठे, उनके हृद्तल फट गये और व्यथा के आधिक्य से उनमें चीरें चल पड़ी।

६१

तालावो के हृद्तलो में चीर चलाकर भी लूओ ने उनको कोसना वन्द नही किया और कटे पर नमक के समान उन चीरो पर वालुका विखरा दी।

६२

तालावो के पेंदो में पपडिया उभर आई, मानो लूओ के चावुको से उनकी खाल उडादी गई है।

६०

जीव तिसाया जावता
जोड़ा हुया अधीर
डाळ डाळ हिवड़ो हुयो
चाली चीरा चीर

६१

लूआ भले न सास ली
तळ में चीर चलाय
वाढे ऊपर लूण ज्यू
वाळू दी बुरकाय

६२

तळी तळी में पापड्या
प्रगटी जोडा मांय
जाणै लूआ कोरडा
दोन्ही खाल उडाय

लू

६६

मरुधर में लूओ के प्रताप से स्नान के लिए खारा पानी, मनुष्यो के पीने के लिये मीठा और पशुधन के लिए कुछ नमकीन इस तरह अलग अलग पानी काम में लाते है।

६७

मिलनातुर दो हृदय गले से मिलने के लिए एक दूसरे के पास आते है पर उष्मा आधिक्य के कारण परस्पर अङ्ग-स्पर्श सह्य नही होता इस तरह लूऍं उन्हे बहुत दु खित करती है।

६८

प्रीतम के दर्शन को पाकर हृदय शीतल होता है पर लूऍं उनके पारस्परिक मिलन में बाधक बनकर अपना हठ पूरा करती है।

६६

न्हावण पाणी और है
मिनखा पीवण और
घामण घन नै दूसरो
लूआ मुरधर जोर

६७

दो आतुर मन मिलण नै
आमा सामा आय
भेट्या पहला धकधकै
लूआ जीव जळाय

६८

प्रीतम रो मुख पेखता
हिवडो होवै हेम
लूआ पण रोकै मिलण
भलो निभावै नेम

लू

६९

हे लूओ ! तुम्हारी प्रचड गर्मी के कारण आधी रात तक तो योंही चैन नही पडता। वडी कठिनता से थोडा सा समय मिलता है कि इतने में वडे तडके युवतिया पानी लाने के लिए उठ खडी होती है। इससे मालूम पडता है तुम्हारा उनसे कोई विशेप वैर है।

७०

आप न जाने किस मोद में सूर्य के तीव्र ताप के साथ रमण करती है और सब दम्पतियो को अलग अलग कर रक्खा है। न जाने यह उनका कौनसा न्याय है !

७१

लूओ मे अङ्गो को वचाकर माताए अपने वच्चो को दूध पिलाने का प्रयत्न करती है पर छातियो से लगते ही वच्चे छटपटाने लगते है और विलख विलख कर रह जाते है।

६९

आधी रात न जक पड़ै
लूआ थारै कैर
उठ भागै तड़कै वड़ै
बडो नवोढा वैर

७०

आप रमै किण मोद में
रवि रै तीखै ताव
जोडी सै तोडी भली
लूआ किसड़ै न्याव

७१

मावा टावर मेळवै
लूआ अग बचाय
छाती मिळता छटपटै
बिलख बिलख रह ज्याय

लू

७२

तुम्हारे शैशवकाल में एक अक्षय तृतीया का त्यौहार आता है अन्यथा तुम्हारे राज्य में त्यौहार रूठे ही रहते है ।

७३

सारे वृक्ष सुखा दिये गये हैं, प्राणी मात्र को कमजोर कर दिया है, पर न जाने लूएँ दिन दहाडे चोरो को क्यो प्रश्रय देती है ?

७४

जिनका पेट कमर से जा लगा है और दिन रात खाली पेट काम में लगे रहते है, ऐसे कृषक वर्ग से हे लूओ ! तुम्हारा किस कारण से विरोध है ?

७२

वाळपणै रमता थका
आवै आखातीज
वाकी थारै राज मे
त्यहारा री खीज

७३

सारा वाठ सुकाविया
कीधा जीव निजोर
लूआ थे पाळो भला
घोळै दिन रा चोर

७४

भूखा भागै रात दिन
मिळियो पेट कवाड़
किण कारण सू किरसाण
लूआं थारी राड़

लू

७५

खस की टट्टियो से घिरे हुए, नीचे तहखानो में आराम करने वाले भाग्यशाली पुरुषो से जब तक तुम्हारा साक्षात्कार न हुआ तब तक तुम अपना प्रचड ताप वृथा ही समझो, लूओ ।

७६

लूओ, तुम्हारे से बचने के तो अनेको उपाय किये जा सकते है । पर जिन वस्तुओ ने तुम्हारे ताप को अपना लिया है उनसे निर्वाह होना कठिन है ।

७७

गाव एक दूसरे से बडी दूरी पर है, बडी कठिनता से पहुच पाने वाले कोस है और मार्ग लूओ द्वारा मिटा दिये गये है, ऐसी परिस्थिति में हे पथिक, तुम्हे जीवन से हाथ धोना पडे तो इसमें किसका दोष ?

लू

७५

खस रा टाटा घेरिया
अूडा ओरा जाय
भागी मिनख न भेटिया
लूआ विरथा लाय

७६

लूआ थासूं वचण रा
करल्या कोड उपाव
थारो तप जिण झेलियो
उण सू कठण निभाव

७७

अळगा अळगा गावडा
करडा करडा कोस
लूआ रळक्या राहड़ा
पथी कुण नै दोस

लू

७८

पृथ्वी से ऊ ची उठकर लूओ की ज्वालाए कानो को स्पर्श करती हुई मानो कहती जाती है कि पथिक ! भूलकर भी हमारे रास्ते से होकर न निकलना ।

७६

लूओ ने जगल में घूम घूमकर सारे मार्ग मिटा दिये है । मार्गों को मिटाना तो एक वहाना मात्र था, वास्तव मे उन्हें पथिको को प्रचड ताप में जलाकर मारना था ।

८०

लूओ के चलते ही सारे मार्ग सकुचित हो गये है । पथिकजन केवल रात्रि ही में निकलते है वाकी दिनभर मार्ग खाली पडे रहते है ।

लू

७८

लूआ झळ उठ आवती
काना में कह जाय
मत ना पथी नीसरे
म्हारै मारग आय

७९

लूआ फिर फिर रोहिया
रळकाया सै राह
पथ मेटण मिस मारिया
पथी दारुण दाह

८०

पतळा पडिया पथ सै
लूआं जद चाली
राता पथी नीसरै
आखै दिन खाली

८१

थोडी थोडी दूर पर छोटे छोटे टीले आकर पथिकजनो को ठहराते है मानो प्रेमपूर्वक उन्हें वापिस लौट जाने के लिए आग्रह करते है।

८२

वडे वडे टीलो से छोटे छोटे टीले लूओ के हलकारो द्वारा अलग कर दिये गये है। उनसे जो गर्म ज्वाला निकल रही है वह मानो उनका विरहजनित उष्ण उच्छ्वास है।

८३

सूर्य भगवान मध्याह्न में आकर रुक गये है और उनकी प्रगति कुछ धीमी मालूम पडती है, मानो लूओ के ताप से वे स्वय होश हवास खो वैठे है।

लू

८१

पग पग टीबी मारगा
रोकै आडी आय
पाछा फेरै पथिया
जाणै हेत दिखाय

८२

टीबा फाटी टीबड्या
लूआ हलकारा
ताती झळ ना नीसरै
सिसकै सिसकारा

८३

सीवो सिर ऊपर थम्यो
टूट्यो सागी जोस
जाणै लूआ ताव सू
सूरज भूल्यो होस

८४

लूओ के उत्पात से ऐसा प्रतीत होता है कि यहा न तो कभी वसत आता होगा, न कभी वर्षाकाल और शीतकाल को तो स्थान ही कहा !

८५

सारी सृष्टि शून्य सी प्रतीत हो रही है। कोई किसी का साथ नही दे रहा है। 'लू' की दुहाई चारो तरफ दी जा रही है। ब्रह्मा तक ने अपनी सृष्टि-रचना वद कर दी है।

८६

सूर्य की लालिमा और तेज न जाने कहा चले गये ? सध्या समय अस्त होते हुए सूर्य भगवान का मुख पीला क्यो हो चला है ?

८४

भूलै रूप वसत रो
भूलै रुत वरसात
सीतळता भूलै अवस
लूआ रै उतपात

८५

सूनो सो लागै जगत
कोइ न देवै साथ
फिरै दुहाया लू प्रगट
विधना खीच्यो हाथ

८६

गयी कठै लाली निकळ
गयो कठै परताप
आथण आथवता अरक
पीळो मुख क्यू आप

८७

दिन भर सूर्य ने अपना तेज लूओ को लुटा दिया इसी कारण अस्त होते हुए उनका मुख कान्तिहीन हो गया है।



८८

दिनभर सूर्य ने कुल की मर्यादा लाघकर लूओ के साथ रमण किया। लूओ ने उनकी सारी लाली लूट ली। यही कारण है कि अस्त होते हुए सूर्य में पीलापन आ गया है।

८९

सध्या समय फिर से सारी सृष्टि के मुख पर चमक देखकर सूर्य ने हार मानकर अपना तेज कम कर अस्ताचल की ओर गमन किया।

लू

८७

आखै दिन वाटी अरक
लूआ नै निज ताव
आथवता अिण कारणै
उतरी मुखरी आव

८८

रमियो रवि सारै दिवस
मेटी कुळ री काण
लाली लूआ लूटली
आथण पीळो भाण

८९

साझ पड्या भल दीसता
अग जग रै मुख आव
असताचल नेडो लियो
सूरज छोडी ताव

लू

६३

सध्या समय पूर्व दिशा में चन्द्रोदय देखकर मरुधरा को भ्रम हुआ कि क्या फिर से सूर्योदय हो गया है ? क्योकि सारी पृथ्वी लूओ के मारे अभी वैसी की वैसी जल रही है।

६४

पवन के साथ हिलमिल कर जिन टीलो पर चन्द्रकिरणो ने क्रीडा की थी प्रात काल से पहिले पहिले लूओ ने उन चिन्हो को मिटा दिया।

६५

प्रात काल क्षण भर के लिए अवसर मिला, चद्रदेव भी प्रफुल्लित हो चमक उठे और लूओ का प्रभाव जाता रहा।

६३

अूगण चादो अूगियो
मुरधर भरम घर्‌यो
धरती लूआ धकधकै
पाछो भाण फिर्‌यो

६४

चादकिरण मिळपवन सू
टीबाँ करी किलोळ
पीळै बादळ खोज ले
लूआ रोळगिदोळ

६५

पो फाटी जद भोर में
खिणेक लाग्यो दाव
चादो मुळक्यो मोद में
मिटियो लूआ ताव

९६

रात्रि का अतर पाकर भगवान अशुमाली पुन पूर्ववत् भासमान होने लगे, उनके मुख का पीलापन जाता रहा और वे अपने सारे दोप भूल गये।

९७

लूओ के द्वारा पूर्ण रूप से पोपित वादलियाँ प्रगट होने लगी है। उनकी गति धीमी पड गई है, तेज कम हो चुका है, और उनके गीत भी वन्द हो चुके है।

९८

वादलियो को देखकर।लूओ! तुम्हारा उदास होना वृथा है। अव तुम्हारे जलाये हुए इनके द्वारा पल्लवित होगे और पल्लवित पादप पुष्पित और फलयुक्त होगे।

लू

६६

रात पड्यो जद आतरो
भूल्यो सारा दोस
पीळोपण मुख रो गयो
सूरज सागी रोस

६७

मद गती तप तेज कम
छूटी रागळिया
पूरा दिन लू पोखिया
प्रगटी वादळिया

६८

लूआ थे क्यू अुणमणी
दीठा वादळिया
थारा वाळ्या पाघरै
फळसी पांघरिया

९९

लूओ ! तुम अपने समय में खूब चली और अपनी मनोकामना पूर्ण की। अब वादलिया उमग में भर भर मरुधरा को वर्षा से पूरित करेंगी।

१००

मरुधर वासियो के सारे रोग लूओ के ताप द्वारा नष्ट कर दिये गये। ऊपर से देखने में वहा के लोग श्यामवर्ण दिखाई पडते हैं पर भीतर से स्वर्ण सदृश स्वच्छ है।

१०१

लूओ, जिस दिशा में कोमल अग वाले पुरुष निवास करते हैं उस दिशा को वचाना क्योकि तुम्हारा ताप सहने की उनमें सामर्थ्य नही। तुम्हे तो मरुधर वासी ही सहन कर सकते हैं, यही आकर अपने मन की निकालो।

लू

६६

लूआ थे चाली भली
ले ले मन री मोज
मुरधर मेहा मेळसी
वादळिया भर चोज

१००

लूआ रोग भगाविया
मुरधर मिनखा जेह
ऊपर दीसै स्याम रग
भीतर कचन देह

१०१

जिण दिस नर कवळाठिया
मतना कीज्यो वास
थानै मुरधर झेलसी
जी भर देवो तास

लू

१०२

लूओ । तुम्हारी प्रचड ज्वाला में मरुधरा ने सब कुछ की आहुति दे दी । यह सब मरुधरा की तपस्या का प्रताप है कि अन्य दूसरे प्रान्त उसका उपभोग करते है ।

१०३

लूओ । जिन प्राणियो ने तुम्हारा तेज सहन कर लिया है वे स्वय तेज स्वरूप बन गये है, अब उन पर अन्य ताप क्या असर कर सकता है ।

१०४

मरुधरा को जीवन प्रदान करने वाली बादलिया भी तुमसे अपना जीवन प्राप्त करती है, अत लूओ, चाहे जितनी चलो, मरुधरा तुम्हारे ताप को स्वेच्छा से सहन करेगी ।

लू

१०२

लूआ थारै ताव में
दीन्हो सव कुछ होम
करै तपस्या मुरधरा
विलसै वीजी भोम

१०३

जीव जिका सह नीसर्‌या
लूआ थारो ताप
उण नै जग में आच के
ताप वण्या वै आप

१०४

जीवण दाता वादळ्या
थासू जीवण पाय
भल लूआ वाजो किती
मुरघर सहसी लाय

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

शब्दकोष

(अ)

अकरी–तेज
अगनझळ–अग्निज्वाला
अप्रमाण–अपरिमित
अडया–डट गये
अणमाप–अपरिमाण, अनत
अभाग–निर्भाग्य
अरक–सूर्य

(आ)

आका–आको की
आखै–दिन भर, सम्पूर्ण
आडी–सामने, बीच में
आथवता–अस्त होते हुए
आधै प्राण–अधमरे
आव–कान्ति
आय'र–आकर
आली–गीली

(इ)

इणतास–इस त्रास से
इमि–अमृत (पाचक होने के
कारण जल अमृत)
इसडै–ऐसा

(ई)

ईसकै–ईर्ष्या से

(उ)

उगण दिस–पूर्व दिशा
उडार–उडान
उणमणी–उदास, उन्मन
उपाव–उपाय

(ऊ)

ऊगळं–उगलती है
ऊगियो–उदय हुआ
ऊझळ्यो–उमडकर उझल पर
ऊडा ओरा–तहखानो में

(ए)

एढो–आश्रय, निवासस्थान

(ओ)

ओट मती उघाडज्यो–

इनका आवरण मत हटाना
ओटो–आड, लू को रोकने वाली
ओरा–मिट्टी के मकान
ओटाळ–उलटे

(अ)

अगभूजो–अग जलाना

(क)

कडकडियाह–जोर से चलने लगी
कठण–कठिन
कदेक–कभी
कमळाय–कुम्हला गई
करडा करडा–कठिनता से आने वाले
कळ्या–कलिया
कवळाठिया–पतले, निर्बल
कानी–तरफ
काळ–मौत
काळा–काले मृग
किण–किस
किरण्याह–अपने से मिली हुई सूर्यकिरणों को अूची करके
किलोळ–क्रीडा, खेल
किसो–क्या
कीधी आ के–यह क्या किया
कूवटा–कूओ में
केम–कैसे
कैर-अत्याचार से
कोड–करोड
कोय–कोई
कोरा–स्वच्छ
कोसा–कोसो तक

(ख)

खाय–खाता है
खिणेक–क्षण भर
खिरण–झडना
खेम–क्षेम, कुशल
खेळ्या–कूअे का वह भाग जिसमें पशु पानी पीते है
खोखा–शमी वृक्ष (खेजडा) के पके हुए फल

(ग)

गोडी–जोडे, घुटने

(घ)

घणी जुगत–बहुत युक्ति से

घमकतो–चमचमाता हुआ

(च)

चाली चीरां चीर–
चीरो में भी चीरें चल पडी, फटे हुए फिर फट गये

चाव–इच्छा, प्रसन्नता

चाच–चोंच

चिडिया–चिडी के बच्चे

चीर चलाय–चीर चला कर

चूण–चुग्गा

चूसली–चोसली, सुखादी

चैती–चैत्र की, वसंत की

चोघड–अूट पर पानी के चार घड़े लाना

चोज–आनद उमंग में भर कर

चोट न चूकै–प्रहार करना नहीं चूकती

चोगिरद–चारों तरफ

(छ)

छाणी–छान डाला

छाळो छाळ–छाल पर छाल

छिपाळी–छिपना

(ज)

जक पड़ै (न)–चैन नहीं मिलता

जठै–जहां

यतन–यत्न

जद–जब

जाळै–भस्म करना

जाळो–जाल

जिका–जो

जीभडल्यां–जिह्वाओं की

जीवण–प्राण-जल

जे–यदि

जेम–जो

जेह–जो

जोडा–अेक प्रकार का जलाशय

जोयज्यो–देखना

ज्यो–जैसे

(झ)

झळ–आंच

झाला–हाथ का इशारा

झीणी–मंद मद

शब्दकोष

झुर घुर–पश्चात्ताप से मन ही मन रोना
झूझळ–क्रोध में
झेलसी–झेल सकेंगी

(ट)

टाळै–हटाती है (लूम्रो से बचाती है)
टीवड़्या–छोटे धोरे
टीवा–वडे धोरो से
टूट्या पडै–टूटे पडते है (एक पर एक गिरते है–प्यास का आधिक्य)

(ठ)

ठम ठम–जलहीन कूम्रो की ध्वनि
ठाली–खाली
ठोडी–चिवुक, ठोडी
ठोड–स्थान
ठडी नजरा–शीतल दृष्टि से

(ड)

डाळ डाळ हिवडो हुयो–
हृदय फट गया
डिडाय डिडाय–मरते हुए मृगो का करुण क्रदन

(ढ)

ढूकता (नह)–पास तक नही आते

(त)

तगरा–घटकपाल (घडो का खप्पर)
तणै–खिच रही है
तप–तपकर
तळ में–पेंदे में
तळसीर–नीचे का
तळी तळी में–हर पेंदे में
तातो–तेज गर्म
ताव–तेज
ताव–ताप
तावावरणी–ताम्रवर्ण
तिलकी–हृदय की गर्मी-प्यास
तिसळती–फिसलती
तिसाया–प्यासे
तेह–वे भी
तोवै ज्यू–तवे के समान

(थ)

थक्यो–रुक गया

थिग थिग–लड़खडाते हुए

(द)

दडाळा–मिट्टी के ढेर वाले

दड़ी पडी–छिपी पडी हुई

दिखरण पवन–दक्षिरण का वायु मलयानिल

दिन धोळा–प्रकाशयुक्त दिन में भी उन्हें मारे जाने की माशंका नही

दीठां–देखने पर–देखी

दुहारा–दुहने वाले

(ध)

धकधकै–जल रही है

धरणी–स्वामी

धन नै धामरण–पशुओ को पिलाने का

धुआसो–धुए की कालिमा

धोळा दोपारा–ठीक दोपहर

(न)

नह–नही

नाड–ग्रीवा, गर्दन

नान्हा नान्हा–छोटे छोटे

नारपरगं–स्त्री स्वभाव

निठसी–कठिनता से

निभाव–निर्वाह

निसासा–नैराश्य सूचक ऊचे श्वास

नीवडै–समाप्त हो जाता है

नीसरै–निकल रही है

(प)

पकडै चाल–चलना सीखते है

पतळा पडिया–सूक्ष्म हो गये (प्राय. मिट गये, आना जाना रुक गया)

पथ मेटरण मिस–मार्ग मिटाने के बहाने

पसार–फैलाकर

पाकिया–पक गये

पाछी–फिर से

पाडी–भैंस की बच्ची

पान खडक्क्या–पत्तो की आवाज से

पापळया—पपडिया
पाळ—तट, किनारा
पांघरै—हरे हो जाते हैं
पिळीजिया—पीले हो गये
पीळो वादळ—ऊपाकाल
पीजू—कैर (करील) के गोलाकार फल
पुरसी—परोसी
पूरा दिन—पूरे दिन लेकर
पूरै जोवन—पूर्ण यौवन
पूळा—पूलका, ज्वार वाजरे आदि के वधे हुए गठ्ठे
पेट कवाड—पेट कमर से मिल गया
पेट भार—गर्भ
पैल वेम—प्रथम प्रसव
पोखिया—पोपित करके
पोखी—पोपित, पाली हुई

(फ)

फळसी—फलेंगे
फाटी—अलग करदी

(व)

वडै तडकै—प्रभात से पहिले
वणराय—वनस्पति
वध वध—वढ़ वढ कर
वरतै—वरतते हैं, उपयोग में लाते हैं
वरफाण—वरफ का ढेर
वहकी—वहक गई
वाखोटिया—मृगशावक
वाढे ऊपर—कटे हुए पर
वाजी आय—चलने लगी
वाळपणै—वाल्यकाल में
वाळी—जलाई
वाळू—वालू रेत
वुरकाय (दी)—छिडक दी
वाळै जाळै—दोनो एकार्थ शब्द-अतिशय के लिये पुनरुक्ति
विन पानडा—पत्तों के विना
विरथा—व्यर्थ-वृथा
वीजी—दूसरी
वेर्‌या—कुइया

वेलड़्या–वेलें
वोभा वांठ–झाड़ झखाढ
वटाती–बाट लेती
वजड–बिना जोती हुई भूमि

(भ)

भगाविया–भगा दिये
भल–चाहे
भली–अच्छी प्रकार
भळे–फिर
भातै पहल–दोपहर से पहले
भीड–विपत्ति
भुरडीजिया–भुन गये
भुर भुर–सूख कर गिरना, झड़ जाना
भूजवै–झुलस डालती है, भुन जाता है
भेटिया–मिले
भोम–भूमि

(म)

मगेज–अभिमान
मती लडायज्यो–लाड मत करना
मती लजाया–लज्जित मत करना
माख्या–मक्खियां
मापणो–मातृत्व को
मा वारा–मातृ रहित
मुरधर–मरुधरा
मुळक्यो–मुस्कराया
मूळ–बिलकुल
मेळवै–छाती से लगाती है (दूध पिलाने के लिये)

(र)

रगडक–घर्षण
रळकाय–मिटा दिये
रळक्या–लूओं से मिटाये हुए
राख्या ख्याल–ध्यान रखना
राखै–रखता है
रागळिया–गाने
रात्यू–रात भर
राहडा–मार्ग
रू–रोम
रूंआ रूआ–रोम रोम से
रोप्या पड्या–गडे हुए

पापड़्या–पपडिया
पाळ–तट, किनारा
पांघरै–हरे हो जाते हैं
पिळीजिया–पीले हो गये
पीळो बादळ–ऊषाकाल
पीजू–कैर (करील) के गोलाकार फल
पुरसी–परोसी
पूरा दिन–पूरे दिन लेकर
पूरै जोवन–पूर्ण यौवन
पूळा–पूलका, ज्वार वाजरे आदि के वधे हुए गठ्ठे
पेट कवाड–पेट कमर से मिल गया
पेट भार–गर्भ
पैल वेम–प्रथम प्रसव
पोखिया–पोपित करके
पोखी–पोपित, पाली हुई

(फ)

फळसी–फलेंगे
फाटी–अलग करदी

(व)

वडै तडकै–प्रभात से पहिले
वणराय–वनस्पति
वध वध–बढ़ वढ कर
वरतै–वरतते हैं, उपयोग में लाते है
वरफाण–वरफ का ढेर
वहकी–वहक गई
वाखोटिया–मृगशावक
वाढे श्रूपर–कटे हुए पर
वाजी श्राय–चलने लगी
वाळपणै–वाल्यकाल में
वाळी–जलाई
वाळू–वालू रेत
वुरकाय (दी)–छिडक दी
वाळै जाळै–दोनो एकार्थ शब्द अतिशय के लिए पुनरुक्ति
विन पानडा–पत्तो के विना
विरथा–व्यर्थ-वृथा
वीजी–दूसरी
वेर्‍या–कुइया

वेलड्या–वेलें
वोझा वाठ–झाड झखाड
वटाती–बाट लेती
वजड–बिना जोती हुई भूमि

(भ)

भगाविया–भगा दिये
भल–चाहे
भली–अच्छी प्रकार
भळे–फिर
भातै पहल–दोपहर से पहले
भीड–विपत्ति
भुरडीजिया–भुन गये
भुर भुर–सूख कर गिरना, झड जाना
भूजवै–झुलस डालती है, भुन जाता है
भेटिया–मिले
भोम–भूमि

(म)

मगेज–अभिमान
मती लडायज्यो–लाड मत करना
मती लजाया–लज्जित मत करना
माख्या–मक्खियां
मापणो– मातृत्व को
मा नारा–मातृ रहित
मुरधर–मरुधरा
मुळक्यो–मुस्कराया
मूळ–बिलकुल
मेळवै–छाती से लगाती है (दूध पिलाने के लिये)

(र)

रगडक–घर्षण
रळकाय–मिटा दिये
रळक्या–लूओं से मिटाये हुए
राख्या ख्याल–ध्यान रखना
राखै–रखता है
रागळिया–गाने
रात्यू–रात भर
राहडा–मार्ग
रू–रोम
रूंआ रूआ–रोम रोम से
रोप्या पड्या–गडे हुए

रोळ गिदोळ–मिट्टी में मिला दिया
रोळा–हल्ले से, शोर से
रोस में–क्रोध में, रोष में
रोसिया–मसल दी
रोहिया–जगल में

(ल)

लडथडता–लडखडाते हुए
लजावती–लज्जित करती
लदलद–लदे हुए
लपकी–वढी
ललकारा–ललकारो से (लू की सनसनाहट)
लाग–लगने से
लाग्यो दाव–मौका हाथ आया, अवसर मिला
लाय–गर्मी
लारो लियो–पीछा किया
लाल–पुत्र
लाहोरी–शिकारी कुत्ते
लीधी–ली
लुकाय–छिपाकर
लुकावती–छिपाती हुई
ले लाली–लालिमा लेकर, लाल होकर
ले ले–पाकर

(व)

वहै–धारण किये हुए
वाय–वायु
विलसै–विलास कर रही हैं
व्रखरै भाण–वृष राशि का प्रचड सूर्य

(स)

समूळ–मूल सहित
सरण–शरण
सहल–सहज, आसान
सा–सारी
सागरिया–शमी (खेजडा) वृक्ष का कच्चा फल
साठीका–साठ पुरस गहरे कुए
साण–शान
सामी पाळ–किनारे के सामने
सास ली (न)–विश्राम न लिया

शब्दकोष

सासा भरैं—ऊंचे श्वास लेते हैं
सिसक सिसक—ससक ससक कर
सिसकैं सिसकारा—सिसकारे लेकर /सिसक रही हैं
सीगटी— छोटे छोटे सीग
सुकाविया—सुखा दिये
सुध वायरा—सुधिहीन
सूकिया—सूख गई
सूळ—शूल
सूवती—प्रसव के समय
सूसाता—सूं सूं करते हुए
सेको—सेकना, जलाना
सोगन लीध—शपथ ली
सोसवैं—सुखाती हैं
सोसिया—सुखा दिये
स्यू—से

(ह)

हाचळा—स्तनो से
हिमाचल—हिमालय
हियो—हृदय
हिवडै—हृदय में
हिरण्या—मृगियो को
हीड्या—झूले झूलते थे
हेम—हिम ढडा



रोळ गिदोळ–मिट्टी में मिला दिया
रोळा–हल्ले से, शोर से
रोस में–क्रोध में, रोष में
रोसिया–मसल दी
रोहिया–जगल में

(ल)

लडथडता–लडखडाते हुए
लजावती–लज्जित करती
लदलद–लदे हुए
लपकी–चढी
ललकारा–ललकारो से (लू की सनसनाहट)
लाग–लगने से
लाग्यो दाव–मौका हाथ आया, अवसर मिला
लाय–गर्मी
लारो लियो–पीछा किया
लाल–पुत्र
लाहोरी–शिकारी कुत्ते
लीधी–ली
लुकाय–छिपाकर
लुकावती–छिपाती हुई
ले लाली–लालिमा लेकर, लाल होकर
ले ले–पाकर

(व)

वहै–धारण किये हुए
वाय–वायु
विलसै–विलास कर रही है
व्रखरै भाण–वृष राशि का प्रचड सूर्य

(स)

समूळ–मूल सहित
सरण–शरण
सहल–सहज, आसान
सा–सारी
सागरिया–शमी (खेजडा) वृक्ष का कच्चा फल
साठीका–साठ पुरस गहरे कुए
साण–शान
सामी पाळ–किनारे के सामने
सास ली (न)–विश्राम न लिया

सासा भरै–ऊंचे श्वास लेते है
सिसक सिसक–ससक ससक कर
सिसकै सिसकारा–सिसकारे लेकर
/सिसक रही है
सीगटी– छोटे छोटे सीग
सुकाविया–सुखा दिये
सुध वायरा–सुधिहीन
सूकिया–सूख गई
सूळ–शूल
सूवती–प्रसव के समय
सूसाता–सू सूं करते हुए
सेको–सेकना, जलाना
सोगन लीध–शपथ ली
सोसवै–सुखाती है
सोसिया–सुखा दिये
स्यू–से

(ह)

हाचळा–स्तनो से
हिमाचल–हिमालय
हियो–हृदय
हिवडै–हृदय में
हिरण्या–मृगियो को
हीड्या–झूले झूलते थे
हेम–हिम ढडा



शब्दकोष

सासा भरै–ऊंचे श्वास लेते हैं
सिसक सिसक–ससक ससक कर
सिसकै सिसकारा–सिसकारे लेकर
/सिसक रही है

सींगटी– छोटे छोटे सीग
सुकाविया–सुखा दिये
सुध वायरा–सुधिहीन
सूकिया–सूख गई
सूळ–शूल
सूवती–प्रसव के समय
सूसाता–सू सूं करते हुए
सेको–सेकना, जलाना

सोगन लीध–शपथ ली
सोसवै–सुखाती है
सोसिया–सुखा दिये
स्यू–से

(ह)

हाचळा–स्तनो से
हिमाचल–हिमालय
हियो–हृदय
हिवडै–हृदय में
हिरण्या–मृगियो को
हीड्या–झूले झूलते थे
हेम–हिम ढडा

